शिक्षा का बदलता परिदृश्य: मीडिया की भूमिका

अमित सोनी,

https://doi.org/ 10.61410/had.v19i4.211

सारांश –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अलगाव में अपना जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। सामान्यतया उसके क्रियाकलाप न केवल उसे प्रभावित करते हैं, बल्कि सम्पूर्ण समाज को प्रभावित करते हैं। समाज मनुष्य को अनेक रूपों में प्रभावित करती है। इस अनुसन्धान पत्र में मीडिया को संक्षिप्त रूप से परिभाषित किया गया है, साथ ही समाज पर मीडिया के प्रभावों को भी बताया गया है।

प्रमुख शब्दावलियाँ– समाज, मीडिया, मीडिया के प्रभाव के सिद्धान्त, संचार के सिद्धान्त इत्यादि।

परिचय –

ऐसे साधन जिसके माध्यम से विभिन्न प्रकार की सूचनाएं, खबरों आदि को दूर–दराज के क्षेत्रों में लगभग हर व्यक्ति तक पहुँचाने का प्रयत्न किया जाए, इन माध्यमों को मीडिया (मनसंचार) के नाम से माना जाता है। इसके अन्तर्गत रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र–पत्रिकाएं, इंटरनेट, सोशल मीडिया आदि आते हैं और जब इन माध्यमों का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता है तो इनको शिक्षा के साधन कहा जाता है। सामाजिक जीवन में मीडिया का प्रभाव अनेक रूपों में परिलक्षित होता है। जैसे राष्ट के परिप्रेक्ष्य में सबके लिए शिक्षा पहुँचाने का कार्य, शिक्षा का अधिकार कानून को सही प्रकार से लागू करवाने का कार्य का रेडियो, दूरदर्शन आदि के माध्यम से सामाजिक नाटकों के प्रसारण से सामाजिक चेतना का विकास या सांस्कृति गतिविधियों के प्रदर्शन से संस्कृति से परिचय एवं संस्कृति का संरक्षण आदि।

मीडिया का महत्व–

1. जनसंचार के माध्यमों से सभी को शिक्षा पहुँचा कर संविधान में शिक्षा के मूलभूत अधिकार के राष्ट्रीय महत्व को पूरा करना।
2. दिन–प्रतिदिन देश–विदेश की घटनाओं से जन सामान्य को परिचित कराना।
3. देश के विभिन्न भागों की संस्कृति से जुड़े कार्यक्रम के प्रदर्शन द्वारा जन सामान्य को अपने देश की संस्कृति को परिचित कराना।
4. समाचार आदि के प्रसारण से जन सामान्य को एक सजग व सचेत नागरिक बनाना।
5. जन सामान्य की सूचनाओं को शीघ्रता से दूर–दूर तक पहुंचाना।
6. शिक्षा के स्तर में सुधार की दृष्टि से औपचारिक शिक्षा से सम्बद्ध कठिन संकल्पना या अधिक साधनों के प्रयोग वाले पाठों के प्रदर्शन से पाठों को सभी के लिए उपलब्ध कराना।

समाज पर मीडिया का प्रभाव–

मीडिया के माध्यम से ही समाज में विभिन्न प्रकार की सूचनाओं का आदान– प्रदान होता है एवं न सामान्य को जागरूक बनाने का प्रयास किया जता है। मीडिया के द्वारा ही कठिन संकल्पनाओं को सरल व व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। सामाजिक समस्याओं और उनके निदान को प्रस्तुत करना, सूझ–बूझ उत्पन्न करना, विभिन्न घटनाओं पर अपना मत बनाने की उत्सुकता पैदा करना, जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति एवं सृजनात्मकता को पैदा करना, व्यावहारिकता से सिद्धान्तों को मोड़ना तथा व्यवहार में परिवर्तन लाना, समाज तथा व्यक्ति को एक–दूसरे के पास–पास लाना, अन्तर्राष्ट्रीय

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, आर०एम०पी०(पी०जी०) कालेज, सीतापुर, उदयपुर

मंच से व्यक्ति को जोड़ना, किसी सामाजिक अथवा अन्य विषय पर विशेषज्ञों की चर्चा करना, विभिन्न समस्याओं पर विशेषज्ञों की सलाह दिलाना, मनुष्य को विभिन्न प्रकार के विषयों की जानकारी देकर उसे निरन्तर समाज से जोड़े रखना, ऐसे स्थानों, कार्यों, वस्तुओं से जनता को परिचित कराना जो उनकी पहुंच से दूर हैं, इत्यादि समाज पर मीडिया के पड़ने वाले प्रभाव हैं।

सूचना और विचारों का प्रसार एवं संचार के आधुनिक साधनों द्वारा मनोरंजन प्रदान करना जनसंचार है। इसके तहत इलेक्ट्रानिक्स और प्रिंट, दोनों ही माध्यम आते हैं। संचार के परम्परागत साधन आधुनिक समाज को परिवर्तित परिस्थितियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में इतने समर्थ नहीं रहे हैं। इसलिए तीव्र गति से सूचना संप्रेषण के कार्य को समपन्न करने हेतु संचार के नए–नए माध्यमों की खोज होती रही है और हो रही है। जन संचार में सूचना का अभूतपूर्व प्रभाव है, अगर सूचना न हो तो संचार का कोई अस्तित्व एंव महत्व नहीं होता।

समाचार पत्र, पत्रिकाएं, टेलीविजन, रेडियो, विज्ञापन, फिल्म आदि जनसंचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाचार पत्र उद्योग जिसके तहत दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, संपादन, उत्पादन और वितरण हेतु सूचना प्रौद्योगिकी की परिष्कृत आधुनिकतम विधियों को प्रयोग में लाते हैं। इलेक्ट्रानिक माध्यमों के तहत रेडियो एवं टेलीविजन आते हैं।

कुछ सीमाएं इस प्रकार है–

1. यह माध्यम एक तरफा साधन की भूमिका निभाते हैं।
2. यद्यपि ये औपचारिक साधन है। जन सामान्य इन्हें अपनी इच्छानुसार देख सकते हैं, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप में ये भी निश्चित समय से बंधे हुए हैं। सभी कार्यक्रम नियत दिन निश्चित समय पर प्रसारित होते हैं।
3. अनेक बार ये कार्यक्रम विशिष्ट वर्ग के लिए प्रसारित होते हैं, परन्तु जब दूसरे भी इसे देखते हैं तो उसका विपरीत प्रभाव भी पड़ता है।
4. एक बार कार्यक्रम निकल जाने पर उसे पुनः सुनना या देखना बहुत मुश्किल होता है।
5. कई बार कार्यक्रम जन सामान्य की समझ से बाहर होते हैं।

भारत जैसे देश में विकास कार्यक्रमों और नीतियों के बारे में जनता में जागरूकता पैदा करने में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इससे जनता को प्रेरणा मिलती है कि वे राष्ट्र–निर्माण के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग ले। इसलिए इस बात की चेष्टा की जा रही है कि एक ओर देश के परम्परागत तथा लोक माध्यमों और दूसरी ओर उपग्रह, संचार जैसे आधुनिक दृश्य श्रव्य माध्यमों में कुशल समन्वय स्थापित किया जाए। वर्ष 2002–03 को भारतीय उद्योग परिसंघ ने मल्टीमीडिया वर्ष रूप में घोषित किया। मीडिया क्षेत्र में प्रत्येक नीति सम्बन्धी फैसले वर्ष 2000 में किए गए, जिनका उद्देश्य तेजी से बदलते मीडिया परिदृश्य की चुनौतियों का सामना करना था, जिसमें प्रस्ताव पास हुआ कि डी0टी0एच0 सेवाओं का खोला जाना, अपलिकिंग नीति का उदारीकरण, रेडियो का एफ०एम० सेवाओं का निजी प्रसारकों के लिए खोजना, पत्र सूचना कार्यालय आदि का प्रारूप तैयार करना प्रमुख है। इसी प्रकार रेडियो सेवाओं में विविधता लाने और मनोरंजन में विकल्प उपलब्ध कराने के लिए 40 शहरों में 100 एफ0एम0 रेडियो स्टेशन 2001 से प्रारम्भ किए गए। पत्र सूचना कार्यालय में एक डाटा वेबसाइट शुरू की गई है।

समाज में संचार के क्षेत्र में प्रमुख बदलाव कम्प्यूटर के कारण संभव हुआ है। दूरसंचार, सड़क, विमान यात्रा आदि के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर का महत्वपूर्ण योगदान है। कम्प्यूटर के प्रयोग ने विश्व को छोटा कर दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी का सफल प्रयोग कम्प्यूटर संचार नेटवर्क है। देश को कोने–कोने से जोड़ने के लिए निकनोट, इडोनेट, एसनेट व आईनेट जैसे राष्ट्रव्यापी कम्प्यूटर संचार नेटवर्क स्थापित किए गए। इनका प्रयोग रेलवे व विमान आरक्षण प्रणाली, बैंकिंग व्यवस्था, संसद

व विधानसभा चुनाव प्रसारण एवं विकास सम्बन्धी आंकड़ों का आधार तैयार करने में निरन्तर किया जाता है। इंटरनेट के बढ़ते अनुप्रयोग से भौगोलिक दूरियों को कम कर दिया है। इस प्रकार नई नई प्रौद्योगिकी का वैश्वीय प्रभाव मनुष्य की अंतहीन समस्याओं का समाधान करने की ओर प्रयासरत है। 100 से अधिक देश आज आँकड़ों, समाचारों और सम्पत्तियों के आदान–प्रदान के माध्यम से परस्पर जुड़े हैं। इसका उद्देश्य ऐसे संचार नियम बनाना है, जिसमें नेटवर्क से जुड़े कम्प्यूटर बहुसंचोजित पैकेट संजालों से सूचना को साफ–सुथरे ढंग से ले–दे सके। यह अंतर–नेटिंग परियोजना कहलाती है। इस अनुसंधान से प्रोटोकाल प्रणाली विकसित हुई, जो प्रारम्भ में दो प्रोटोकालों अर्थात प्रेषण–निमत्रंण प्रोटोकाल (टीसीपी) और अंतर प्रोटोकाल (आई पी) के नाम से जानी गई।

अमेरिका द्वारा विकसित एन.एफ.एस. इंटरनेट के लिए प्रमुख संचार सेवा बन गई। विश्वव्यापी वेब (डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू) का विकास विश्वव्यापी संचार के लिए सर्च में किया गया, जो स्विटजरलैण्ड में कण भौतिकी का संस्थान है। इस प्रकार इंटरनेट हजारों मील दूर बैठे लोगों के साथ बातचीत का सुगम माध्यम एवं किसी विषय पर कहीं से भी सूचना प्राप्त करने का मूल्यांकन स्रोत है। बिना परस्पर सम्पर्क के भी सुदूर स्थानों में ई–मेल से संदेश तेजी से कम खर्च में भेजे जा सकते हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि विभिन्न देशों के समय–वैभिन्य और टेलीफोन से सम्पर्क न होने की पीड़ा से बचा जा सकता है।

सूचना नेटवर्क का प्रयोग भारत जैसे विकासशील देश में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके पास संसाधनों की कमी की समस्या रहती है। प्रत्येक समाज, राज्य अथवा देश के अपने कुछ विश्वास, आदर्श, मूल्य है– लक्ष्य तथा लक्ष्य को प्राप्त करने को योजनाएं होती है। वह इनको प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने का प्रयत्न करता है। इन आदर्शों व मूल्यों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए समाज द्वारा विभिन्न साधनों का प्रयोग किया जाता है। इन्हीं साधनों के माध्यम से समाज में चेतना जाग्रत की जाती है और जनमत तैयार किया जाता है। इसलिए इन्हें जनसंचार के साधन कहा जाता है।

जार्ज ए. मिलर का कहना है कि सूचना को एक स्थान के दूसरे स्थान तक पहुंचाना ही जनसंचार कहलाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जनसंचार का अर्थ उन समस्त साधनों से है, जो सूचना, विचारों और मनोरंजन को देश के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंचाते हैं। इन साधनों के द्वारा ही बहुत कम समय में एक साथ बहुत अधिक लोगों तक अपने विचारों को पहुंचाया जा सकता है। जनसंचार के लिखित साधनों के अन्तर्गत समाचार पत्र पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं, बुकलेट्स एवं पंपलेट्स आदि आते हैं। इस प्रकार से इन साधनों में मनुष्य जीवन से सम्बन्धित सभी पक्षों पर लेख, विचार एवं सूचनाएं प्रकाशित होती है।

लोकतांत्रिक देशों में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के क्रियाकलापों पर नजर रखने के लिए मीडिया को ष्चौथे स्तम्भष के रूप में जाना जाता है। 18वीं शताब्दी के बाद से, खासकर अमेरिकी स्वतन्त्रता आन्दोलन और फ्रांसीसी क्रान्ति के समय से जनता तक पहुंचने और उसे जागरूक कर सक्षम बनाने में मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मीडिया अगर सकारात्मक भूमिका अदा करे, तो किसी भी व्यक्ति, संस्था, समूह और देश को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक रूप से समृद्ध बनाया जा सकता है।

वर्तमान समय में मीडिया की उपयोगिता, महत्व एवं भूमिका निरन्तर बढ़ती जा रही है। कोई भी समाज, सरकार, वर्ग, संस्था, समूह, व्यक्ति मीडिया की उपेक्षा कर आगे नहीं बढ़ सकता। आज के जीवन में मीडिया एक अपरिहार्य आवश्यकता बन गया है। अगर हम देखें कि समाज किसे कहते हैं तो यह तथ्य सामने आता है कि लोगों की भीड़ या असम्बद्ध मनुष्य को हम समाज नहीं कह सकते हैं। समाज का अर्थ होता है, सम्बन्धों का परस्पर ताना–बाना, जिसमें विवेकवान और विचारशील मनुष्यों वाले समुदायों का अस्तित्व होता है। अगर समाज में मीडिया की भूमिका की बात करें तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि समाज में मीडिया प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से क्या योगदान दे रहा है कि एवं

उसके उत्तरदायित्वों के निर्वहन के दौरान समाज पर उसका क्या सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। प्रभाव पर गौर करने पर स्पष्ट होता है कि मीडिया की समाज में शक्ति, महत्ता एवं उपयोगिकता में वृद्धि से इसके सकारात्मक प्रभावों में काफी वृद्धि हुई है, लेकिन साथ–साथ इसके नकारात्मक प्रभाव भी उभर कर सामने आए हैं।

मीडिया ने जहाँ जनता को निर्भीकतापूर्वक जागरूक करने, भ्रष्टाचार को उजागर करने, सत्ता पर तार्किक नियत्रंण एवं जनहित कार्यों की अभिवृद्धि में योगदान दिया है, वहीं लालच, भय, द्वेष, स्पर्श, दुर्भावना एवं राजनीतिक कुचक्र के जाल में फंसकर अपनी भूमिका को कलंकित भी किया है। व्यक्तिगत या संस्थापक निहित स्वार्थों के लिए यलो जर्नलिज्म को अपनाने, ब्लैकमेल द्वारा दूसरों का शोषण करना, चटपटी खबरों को महत्व देना और खबरों को तोड़–मरोड़कर प्रस्तुत करना, दंगे भड़काने वाली खबरों प्रकाशित करना, घटनाओं एवं कथनों को द्विअर्थी रूप प्रदान करना, भय या लालच में सत्तारूढ़ दल की चापलूसी करना, अनावश्यक रूप से किसी की प्रशंसा और महिमामंडन करना और किसी दूसरे की आलोचना करना जैसे अनेक अनुचित कार्य आजकल मीडिया द्वारा किए जा रहे हैं। दुर्घटना एवं संवेदनशील मुद्दो को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करना, ईमानदारी, नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा और साहस से सम्बन्धित खबरों को अनदेखा करना आजकल मीडिया का एक सामान्य लक्षण हो गया है। मीडिया के इस व्यवहार से समाज में अव्यवस्था और असन्तुलन की स्थिति पैदा होती है।

प्रिंट मीडिया और टी०वी० एवं सिनेमा के माध्यम से पश्चिमी–संस्कृति का आगमन और प्रसार हो रहा है, जिससे समाज में अनावश्यक फैशन, अश्लीलता, चोरी आदि घटनाओं में वृद्धि हुई है। इंटरनेट के माध्यम से असामाजिक क्रियाकलाप युवाओं तक पहुंच रहे हैं, जिससे उनमें नैतिकता, संस्कृति और सभ्यता की लगातार कभी आती जा रही है।

निष्कर्ष –

मीडिया की भूमिका यथार्थ सूचना प्रदायक एजेन्सी के रूप में होनी चाहिए। मीडिया द्वारा समाज को सम्पूर्ण विश्व में होने वाली घटनाओं की जानकारी मिलती है। इसलिए मीडिया का यह प्रयास होना चाहिए कि ये जानकारियाँ यथार्थपरक हो। सूचनाओं को तोड़–मरोड़कर या दूषित कर प्रस्तुत करने का प्रयास नहीं होना चाहिए। समाज के हित एवं जानकारी के लिए सूचनाओं को यथावत एवं विशुद्ध रूप में जनता के समक्ष पेश करना चाहिए। मीडिया का प्रस्तुतीकरण ऐसा होना चाहिए जो समाज का मार्गदर्शन कर सके। खबरों और घटनाओं का प्रस्तुतीकरण इस प्रकार हो जिससे जनता का मार्गदर्शन हो सके। उत्तम लेख संपादकीय, ज्ञानवर्द्धक सूचनाएं, श्रेष्ठ मनोरंजन आदि सामग्रियों का खबरों में समावेशन होना चाहिए तभी समाज को सही दिशा प्रदान की जा सकेगी। मीडिया समाज को अनेक प्रकार से नेतृत्व प्रदान करता है। इससे समाज की विचारधारा प्रभावित होती है। मीडिया को प्रेरक भूमिका में भी उपस्थित होना चाहिए, जिससे समाज एवं सरकारों को प्रेरणा व मार्गदर्शन प्राप्त हो। मीडिया समाज के विभिन्न वर्गों के हितों का रक्षक भी होता है। वह समाज की नीति, परम्पराओं, मान्यताओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति के प्रहरी के रूप में भी भूमिका निभाता है। पूरे विश्व में घटित विभिन्न घटनाओं की जानकारी समाज के विभिन्न वर्गों को मीडिया के माध्यम से ही मिलती है। अतः उसे सूचनाएं निष्पक्ष रूप से सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करनी चाहिए।

मीडिया अपनी खबरों द्वारा समाज के असन्तुलन एवं सन्तुलन में भी बड़ी भूमिका निभाता है। मीडिया अपनी भूमिका द्वारा समाज में शान्ति, सौहार्द्र, समरसता और सौजन्य की भावना विकसित कर सकता है। सामाजिक तनाव, संघर्ष, मतभेद, युद्ध एवं दंगों के समय मीडिया को बहुत ही संयमित तरीके से कार्य करना चाहिए। राष्ट्र के प्रति भक्ति एवं एकता की भावना को उभरने में भी मीडिया की अहम भूमिका होती है। शहीदों के सम्मान में प्रेरक उत्साहवर्द्धक खबरों के प्रसारण में मीडिया को बढ़–चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। मीडिया विभिन्न सामाजिक कार्यों द्वारा समाज सेवक की भूमिका भी निभा सकता है। भूकम्प, बाढ़ या अन्य प्राकृतिक या मानवकृत आपदाओं के समय जनसहयोग उपलब्ध

कराकर मानवता का बहुत बड़ी सेवा कर सकता है। मीडिया को सद्मवृत्तियों के अभिवर्द्धन में भी आगे आना चाहिए।

मीडिया की बहुआयामी भूमिका को देखते हुए कहा जा सकता है कि मीडिया आज विनाशक एवं हितैषी दोनों भूमिकाओं में सामने आया है। अब समय आ गया है कि मीडिया अपने शक्ति का सुदपयोग जनहित में कर और समाज का मार्गदर्शन करे ताकि वह भविष्य में भस्मासुर न बन सके।

सन्दर्भ–

1. डॉ० के जॉन बाबू (2010), रोल ऑफ रेडियो इन प्राइमरी एजूकेशन, कनिष्क पब्लिकेशन, डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली।
2. विजेन्द्र कुमार वशिष्ट (2003), शिक्षा मनोविज्ञान, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
3. श्री एम०के० मिश्रा एवं वी०पी० शर्मा (2015), भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. श्री वंश गोपाल झींगरन (1974), पाश्चात्य शिक्षा का इतिहास, हरियाणा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, चण्डीगढ़।
5. जे0सी0 अग्रवाल, श्री एस० गुप्ता (2010), शैक्षिक तकनीकी शिप्रा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
6. श्री आर०पी० पाठक (2010), आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएं एवं समाधान, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।